(गद्य) पुरूष

लहरों के राजहंस

नंद : (मदिरा–कोष्ठ के पास जाकर मदिरा–पात्र उठाता है, फिर रख देता है।)
नहीं, अभी मदिरा नहीं लूँगा, भिक्षु ! तुम्हारी मुस्कुराती हुई भौंहें जिसेस यह न कह सकें, 'स्मृति इतना डर क्यों लगता है, नन्द ? अपनी स्मृति को मदिरा की विस्मृति में डुबो क्यों देना चाहते हो?' (मदिरा–कोष्ठ के पास से हटता हुआ) यद्यपि इसका उत्तर में तुम्हें दे सकता था। कह सकता था कि स्मृति से बचने के लिए तुमने जो स्वाँग रचा है, वह मैंने नहीं रचा, इसलिए।

(झूले के पास रूककर पल–भर सुन्दरी की ओर देखता रहता है।)
अच्छा है लौटकर आते ही तुम्हारे प्रश्नों का सामना नहीं करना पड़ा। मैंने कहा था कि शीघ्र ही लौट आऊँगा, परन्तु आ नहीं सका। इसे लेकर तुम्हारी आँखों में जो व्यंग्य उभरता, उसका उत्तर शायद में न दे पाता।

वह क्या सुख की ही खोज थी जिसने उस तरह जीने के लिए विवश किया ? (आगे के दीपाधार की ओर जाता हुआ) या यह केवल मन का विद्रोह था–बिना विश्वास एक विश्वास के अपने ऊपर लादे जाने के लिए ? या इसलिए कि उस समय मैं इतना सत्त्वहीन क्यों हो गया कि भिक्षु आनन्द के कर्तनी उठाने पर चिल्ला नहीं सका, 'नहीं, यह विश्वास मेरा नहीं है–मैं तुम्हारा या किसी का विश्वास ओढ़कर नहीं जी सकता, नहीं जीना चाहता।'

(टूटे दर्पण के सामने रूककर क्षण–भर अपना प्रतिबिम्ब उसमें देखता रहता है।)
उन्होंने केश काट दिए, तो क्या व्यक्ति–रूप में मैं अधिक सत्य हो गया ? जीभ काट देते, हाथ–पैर काट देते, तो क्या और अधिक सत्य हो जाता ? कौन कह सकता है कि भ्रान्ति वस्तुतः किसे है–उन्हें या मुझे ? (दर्पण के पास से हटकर) उन्होंने कहा, "मैं मैं नहीं हूँ, तुम तुम नहीं हो, वह वह नहीं है–सब किसी उँगली से आकाश में बनाए गए चित्र हैं जो बनने के साथ–साथ मिटते जाते हैं–कि उनका होना न होने से भिन्न नहीं है।" परन्तु मैं पूछता हूँ जब होने न होने में कोई अन्तर हीं नहीं है, तो मेरे केश क्यों काट दिए ? (झूले ओर पीछे के दीपाधार के बीच आकर) और काट ही दिए, तो उससे अन्तर क्या पड़ता है ? कुछ ही दिनों में फिर नहीं उग आएँगे ? अन्तर पड़ता, यदि मेरा हृदय बदल देते–आँखें बदल देते। (झूले पर झुककर)

मोहन राकेश

(गद्य) पुरुष

शहंशाह इडिपस

इडिपस : अज़ीज़ो, ख़ानदाने कैडमम की बेल पर, खिलने वाले नये फूलो, इस फ़रियाद का मकसद क्या है ? ये शाखें, ये फूलों के हार, ये शहर में फैला हुआ मुक़द्दस धुआँ, ये दुख–दर्द को दूर करने वाली दुआएँ, ये कर्बा–ओ–यास की ग़म्माज़ी करने वाली चीख़ें किसलिए ? किसी ख़बरसाँ पर यकीन न करते हुए, हम बजात–ए–खुद वजह दरयाफ़्त करने के लिए आये हैं। हम इडिपस .. जिसके नाम का डंका, चहार आलम में बज रहा है।

राहब की तरफ़ देखकर

मोहतरिम बुजुर्ग ! आप ही बतायें–ये माजरा क्या है ? किसी बात का डर है, या किसी चीज़ की ख़्वाहिश है ? बिला ख़ौफ–ओ–ख़तर बयान करें। हम संगदिल नहीं हैं। हम आपकी दरख़ास्त पर, ज़रूर ग़ौर करेंगे।

सोफ़ोक्लीज़

मधुशाला

बने पुजारी प्रेमी साक़ी,
गंगाजल पावन हाला,
रहे फेरता अविरल गति से
मधु के प्यालों की माला,
'और लिये जा, और पिए जा'—
इसी मंत्र का जाप करे,
मैं शिव की प्रतिमा बन बैठूँ।
मंदिर हो यह मधुशाला।

बजी न मंदिर में घड़ियाली,
चढ़ी न प्रतिमा पर माला,
बैठा अपने भवन मुअज़्ज़िन
देकर मस्जिद में ताला,
लुटे ख़ज़ाने परपतियों के
गिरीं गढ़ो की दीवारें ;
रहें मुबारक पीनेवाले,
खुली रहे यह मधुशाला।

हरिवंशराय 'बच्चन'

(पद्य) पुरूष

ज़मीन

उसने तय किया यह बढ़ई के पास जायेगा
और बातचीत शुरू करेगा
पत्ते गिर रहे हैं और इस समय उसकी रूखानी का
जरा–सा हिलना भी निर्णायक हो सकता है

लाल पत्थर की तरह लग रही थी ज़मीन
जब उसने पहली बार देखा
और उयसे याद आया यही मौसम है जब पेड़
सबसे ज्यादा परेशान होते हैं
मेज और कुर्सियाँ बनने के लिये

अगर इस समय पेड़ को
पेड़ कहना बेमानी लगता है–
और ज़ाहिर है कि लगता है उसने सोचा–
तो उसे ताज़ा बुरादे की ठण्डी खुशबू कहने में
कोई हर्ज़ नहीं

यह पशुओं के बुखार का मौसम है
यानी पूरी ताकत के साथ
ज़मीन को ज़मीन
और फावड़े को फावड़ा कहने का मौसम
जब जड़ें
बकरियों के थनों की
गरमाहट का इंतजार करती है

केदारनाथ सिंह

निम्न नाटकों में से किसी एक नाटक पर साक्षात्कार में बातचीत करने के लिये :–

क्र0सं0	नाटक	नाटककार
01.	अभिज्ञान शाकुन्लतम्	कालिदास
02.	ध्रुव स्वामिनी	जयशंकर प्रसाद
03.	अंधेर नगरी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
04.	लहरों के राजहंस	मोहन राकेश
05.	ख़ामोश ! आदलत जारी है	विजय तेन्दुलकर
06.	कथा एक कंस की	दया प्रकाश सिन्हा
07.	किंग इडिपस	सोफोक्लीज़
08.	रोमियो और जूलियट	विलियम शेक्सपीयर
09.	ए डॉल्स हाउस	हेनरिक इब्सन
10.	चैरी का बगीचा	अन्तोन चेखव